(IJRSSH) 2013, Vol. No. 3, Issue No. II, Apr-Jun ISSN: 2249-4642

भारतीय नाट्य साहित्य पर पाश्चात्य प्रत्यक्ष प्रभाव : 'ऐन्द्राजालम्'

डॉ नीरज कुमारी

सह . आचार्य, संस्कृत विभाग, ठाकुर बीरी सिंह महाविद्यालय, टूंडला, फिरोजाबाद, भारत

WESTERN DIRECT INFLUENCE ON INDIAN DRAMA LITERATURE: 'ANDRAJALAM'

Dr. Neeraj Kumari

Associate Professor, Sanskrit Department

Thakur Biri Singh Degree College Tundla, Firozabad, India

IJRSSH

ABSTRACT

In the field of audio poetry, where stories and novels come, in the field of visual poetry, one-act plays and dramas come. The main goal of both the arts of story and one-act play is that we can get maximum pleasure and entertainment in momentary leisure. On this target point, both story one-act art have been equally successful. Plot, characters, characterization, narration, language style, purpose, country, environment plan, etc. are the elements of story art which are also in one-act art. That is why it is often called the dramatic form of a one-act story and the story as a narrative form of one-act. The biggest difference in these is of audio-visual though the time spent in both of them remains the same.

सारांश

श्रव्य काव्य के जिस क्षेत्र में कहानी और उपन्यास आते हैं, दृश्य काव्य के क्षेत्र में एकांकी और नाटक आते हैं। कहानी और एकांकी नाटक दोनों कलाओं का मुख्य लक्ष्य यही है कि क्षणिक अवकाश में हम अधिक से अधिक आनन्द और मनोरंजन प्राप्त कर सकें। इस लक्ष्य बिन्दु पर कहानी एकांकी कला दोनों को समान रूप से सफलता प्राप्त हुई है।कथानक, पात्र, चरित्र चित्रण, कथोपकथन, भाषा शैली, उद्देश्य, देशकाल, वातावरण योजना आदि कहानी कला के भी वे तत्त्व हैं जो एकांकी कला में भी होते हैं। इसीलिए प्रायः एकांकी कहानी का नाटकीय रूप कहा जाता है और कहानी को एकांकी का कथात्मक रूप । इनमें सबसे बड़ा अन्तर दृश्य - श्रव्यात्मकता का होता है यद्यपि उन दोनों में समय का व्यय बराबर ही रहता है।

(IJRSSH) 2013, Vol. No. 3, Issue No. II, Apr-Jun ISSN: 2249-4642

परिचय

विश्वनाथ कविराज ने साहित्यदर्पण में दस रूपकों के साथ अठारह उप रूपकों का भी वर्णन किया है। 28 नाट्यभेदों में कुल मिलाकर 16 एकांकी हैं । इनमें से रूपक कोटि के चार नाट्य रूप से एकांकी है - भाण, व्यायोग, अंक अथवा उत्सृष्टिकांक एवं वीथी । ईहामृग के विषय में अनिश्चितता है कुछ आचार्य इसे चार अंक का तथा कुछ 'एक ही अंक का स्वीकार करते हैं । इसी प्रकार प्रहसन भी दो अथवा एक अंक का होता है । 18 उपरूपकों में से कुल 10 उपरूपक एकांकी है-गोष्ठी, नाट्यरासक, उल्लाप्य, काव्य, प्रेक्षणक, रासक, श्रीगदित, विलासिका, हल्लीस तथा भणिका । साहित्य दर्पण तथा अन्य शास्त्रीय ग्रन्थों में इन सोलह प्रकार के एकांकियों का विस्तृत विवेचन मिलता है ।

नाटकमथ प्रकरणं भाणव्यायोगसमवकारडिमा : ।

ईहामृगाङ्कवीथ्यः प्रहसनमिति रूपकाणि दश । ।

नाटिका त्रोटक गोष्ठी सट्टकं नाट्य रासकम् ।

प्रस्थानोल्लाप्य काव्यानिप्रेडड़खणं रासकं

संलापक श्रीगदितं शिल्पकं च विलासिका ।

दुर्मल्लिका प्रकरणी हल्लीशो भाविकेति च ।

अष्टादश प्राहुरूपकाणि मनीषिण: ।।

विना विशेषं सर्वेषां लक्ष्म नाटकवन्यतम्

साहित्यदर्पण6/3–6

इस प्रकार संस्कृत नाट्य साहित्य में रूपक तथा उपरूपक भेदों में से एक अंक वाले अनेक नाटक प्राप्त होते है. परन्तु हम उन्हें आधुनिक एकांकी का मूल स्त्रोत नहीं मान सकते क्योंकि इन नाटकों में रस या काव्य तत्त्व की प्रधानता तथा चरित्र - चित्रण की कमी है। आधुनिक एकांकी जो पश्चिम से आया है, उसकी आत्मा मनोविज्ञान तथा अन्तर्द्वन्द्व है। अतः आधुनिक एकांकी पाश्चात्य एकांकी के बहुश: निकट है।

एकांकी नाम प्रारम्भ में अमेरिका के पर्सिवल वाइल्ड 1929 ई0 आदि आलोचकों द्वारा प्रचलित किया गया। कालान्तर में एकांकी नाम से अंग्रेज नाटककार भी नाट्य रचनाएँ लिखने लगे । यद्यपि अंग्रेजी में 1903 ई० से ही एकांकी नाटकों का प्रणयन होने लगा था परन्तु उस समय इनका नाम शार्टर प्लेज ही था और इनको स्वतंन्त्र विधा के रूप में विशेष महत्त्व न मिला था । एकांकी नाम पाकर इन लघु नाटकों को एकांकी नाम से अभिहित किया जाने लगा और पश्चिम के माध्यम से इन्हें नई दिशा प्रदान की गई। इस प्रकार हिन्दी में लघु

IJRSSH

(IJRSSH) 2013, Vol. No. 3, Issue No. II, Apr-Jun ISSN: 2249-4642

नाटकों के रूप में प्रस्तुत की जाने वाली कृतियाँ पाश्चात्य एकांकी के शिल्प का संस्पर्श पाकर आधुनिक एकांकी की स्थिति प्राप्त कर सकीं ।

एकांकी के विकास के सूत्र संस्कृत नाट्य साहित्य में विद्यमान हैं। भरतमुनि द्वारा रस की परिकल्पना विशेषतः नाट्यकला के लिए ही की गई है । महाकवि भास का उरूभंग और नीलकंठ का कल्याण सौगन्धिक 'संस्कृत के प्रसिद्ध एकांकी हैं। प्रो० लूडर्स का मत है कि संस्कृत नाटकों के उदय में छाया नाटकों का विशेष स्थान है । छाया नाटक एकांकी नाट्य कला के ही एक अंक हैं।

आधुनिक एकांकी नाटाकों का प्रारम्भ यूनान देश से माना जाता है । प्रारम्भिक अवस्था में 'हास्य प्रधान' एकांकी नाटाकों में बनतजंपदतंपेमतद्ध या 'पट उत्थापन' कहा जाता था। जो दर्शकों के मनोरंजन के लिए अभिनीत किये जाते थे। यहीं से पाश्चात्य एकांकी नाटाकों नाटाकों का जन्म माना जाता है। कम समय में अधिक मनोरंजन करने के साथ-साथ इनकी लोकप्रियता का कारण यह भी रहा कि इनके लिए न तो विशाल रंगमंच चाहिए और न ही कीमती पोशाक तथा साज सामग्री । इनको साधारण छोटे-छोटे रंगमंच बनाकर भी खोला जा सकता था। धीरे-धीरे इन एकांकियों की प्रसिद्धी बढ़ी और ये मनोरंजन के साथ-साथ सामाजिक सुधार व शिक्षा के भी साधन बने ।

पाश्चात्य नाट्य साहित्य के क्षेत्रा में 20वीं शताब्दी के प्रारम्भ में सन् 1920 में लन्दन में डब्लू जे की कहानी 'बंदर का पंजा' का एकांकी के रूप में नाट्य रूपांतर किया गया। दर्शकों ने मुख्य नाटक की अपेक्षा इस एकांकी को देखने में कहीं अधिक रूचि प्रदर्शित की। एकांकी नाटकों का वास्तविक विकास इंग्लैण्ड में 1924 में ई0 में जे. एस. मेरियर ने किया । अतः पाश्चात्य विद्वानों का ध्यान भारतीय साहित्य की ओर आकृष्ट हुआ, उसी प्रकार भारतीय साहित्यकारों ने भी अंग्रेजी साहित्य का अध्ययन किया ।

भारतीय नाट्य साहित्य पर पाश्चात्य प्रभाव प्रत्यक्ष रूप से शिक्षा संस्थाओं, पारसी कम्पनियों तथा पाश्चात्य विद्वानों के माध्यम से आया। भारतीय साहित्यकारों में भी इब्सन, शा, स्ट्रिन्डवर्ग, गोर्की, चेखव, टालस्टाय, बाइल्ड, आस्कर, मैटरलिंग, ओनील आदि नाट्यकारों के नाटकों का न केवल अध्ययन किया बल्कि विषय तथा शैली दोनों दृष्टियों से उनकी नाट्यशैली को अपनाया ।

जैसा कि नाम से ही विदित है ऐन्द्रजालिक अपनी मनमोहक बातों से जमूरे के द्वारा संसार का कटु सत्य प्रस्तुत करता है । एकांकी के प्रारम्भ में ऐन्द्रजालिक किसी कस्बे की घनी बस्ती में खेल का वातावरण उत्पन्न करता है। वह काले कपड़े से ढके जमूरे से, भीड़ में उपस्थित एवं समाज में श्रेष्ठ माने जाने वाले माफिया, सेठ, विधायक, कालगर्ल, तस्कर, वकील, प्रोफेसर तथा इन्जीनियरद आदि जनों के विषय में पूछता है । वह क्रीड़ाकपोत जलेबी आदि मिष्ठान घूस रूप में खाकर ही खेल प्रस्तुत करता है ।

बालकः– (उच्चस्वरेण) गुरो ! अस्य लुंचितस्य मुखे कुण्डलिनीः प्रवेशय निरन्तरालम् ।

(चतु० / इन्द्र० - पृ.सं. - 29)

IJRSSH

(IJRSSH) 2013, Vol. No. 3, Issue No. II, Apr-Jun ISSN: 2249-4642

प्रारम्भ में वह कृपण श्रेष्ठि जन (सेठ) के चरित्र के विषय में कहता है कि यह तो पुरुष की दृष्टि से नारी, व्यक्ति की दृष्टि से श्रेष्ठीश्वर, शक्ति की दृष्टि से हरिणेश्वर, जाति की दृष्टि से कृपणेश्वर है । ऐन्द्रजालिक द्वारा पाँच श्रेष्ठ पुरुषों के विषय में पूछे जाने पर बालक एम. एल. ए. (विधायक) के विषय में कहता है यह तो जनताभक्षक है ।

'बालकः – अयं जनता भक्षक । बकशावोऽयं यमालये प्रसूतः ,

(चतु0 / इन्द्र० - पृ.सं. - 32)

इस प्रकार जमूरा विधायक के लिए बकशावः यमालयप्रसूत गिरिजापतिवाहनं जैसे व्यंजनात्मक शब्दों का प्रयोग कर आगे परिचय देता है कि इसकी ही कृपा से दीन देश, पीन मेष, मलीन वेष और नए-नए क्लेश उत्पन्न हो रहे हैं। समय-समय पर यह अपने व्यवहार को रंगवत् परिवर्तित कर लेता है। विजयदशमी पर हिन्दू, ईदउत्सव पर मुस्लिम, वैशाखी पर्व पर सिक्ख और क्रिसमस महोत्सव पर आंग्लदेशी हो जाता है ।

तत्पश्चात् जमूरा 'कलिकन्या' (कालगर्ल) पर व्यंग्य करता है । यह वीरवाला साड़ी को पहनने में समर्थ नहीं है। उसके स्थान पर वेलिवितान (बेलवॉटम) जैसे वस्त्रों को पहनती है। जनसमूह के सम्मुख तो साक्षात् पुतलीबाई है और शत्रुजन के विरूद्व साक्षात् झाँसीश्वरी और कामुकों को आकृष्ट करने में तो साक्षात् शर्करा कुण्डलिनी है ।

बालक :- गुरो वीरबाला इयं कालगरला इति विज्ञायते । शाटिकाऽनया संहर्तु न पार्यते । तस्माद्वेलिवितानमात्रं (बेलवॉटम) धारयति । जनसम्मर्दोसारणे साक्षादियं पुतलीबाई, शत्रुजनविमुखीकरणेऽपि साक्षाद् झाँसीश्वरी । अभीकजनामन्त्रणे तु साक्षादियं शर्कराकुण्डलिनी' ।..

(चतु0 / इन्द्र- पृ.सं. 34-35)

यह सौंदर्यपरस्त कन्या अपने इन्द्रजाल से पुरुषों को आकृष्ट कर उनके साथ भोजनालय (restaurant) जाती है, वहाँ ताम्रसूप (tomato soup) का आस्वादन लेती है । कलायपनीर (मटर पनीर) राजमा और तन्दूरी रोटी खाती है। देखिये इसे छोलाभटूरा जैसे व्यंजन से तो इसके भोजन की समाप्ति होती है।

कलिकन्या के पश्चात् उसकी दृष्टि गहरे रंग के वस्त्रों को धारण किये हुए कर्जन जैसी मूंछों वाले बुल्गानिनजैसी दाढ़ी रखने वाले भैरव तस्कर पर पड़ती है।

अवैध मदिरा के आयात-निर्यात के व्यापार से ही उसका पाँच मंजिलों वाला महल बन गया है। गाँजा-भाँग से भरे ट्रकों को यह नेपाल देश की सीमा के पार पहुँचा देता है और बदले में बहुत धन प्राप्त करता है। यह जीवित रावण अपने गाँजा - भाँग के व्यापार से ही पूरे प्रयागनगर को खरीदने में समर्थ है।

IJRSSH

'बालकः – गुरोः भैरवतस्कारोऽयं वर्तते । अवैधमदिरायातनिर्यातमिर्माणबलेनैव पंचभूमिकोऽस्य राजप्रासादोऽभ्रांलिहाग्रः परिलक्ष्यते ।.

(चतु0 / इन्द्र - पृ.सं. - 36)

अब बालक द्वितीय श्रेष्ठ पुरुष वकील के विषय में कहता है । यह पान से रंगे हुये अधरों वाला, काले रंग के कंचुक को धारण किया हुआ, कुक्षि में पंजिका धारण करने वाला यह वकील जिसका जीवन ही मिथ्या है। इसका खाना, पीना, सोना, जागना, स्वप्न देखना सब असत्य में ही समाहित है । कचहरी का कीटाणु है यह । भिक्षुक की तरह हाथों को फैलाता है। चोरों की तरह सब कुछ चुरा लेता है ।

'बालकः गुरो ! मृषाजीवी जनोऽयम् । कचहरीकीटाणुरयम् ।

(चतु0 / इन्द्र - पृ.सं. - 37)

अब जमूरा विश्वविद्यालय के शिक्षक की ओर संकेत करता है जिसका सम्पूर्ण विद्यार्थी जीवन तृतीय श्रेणी का ही है। जिस प्रकार स्वयं ने अंकों को प्राप्त करने का जो यत्न किया है वही छात्र, छात्राओं से अपेक्षा रखता है। छात्र, छात्राओं को अंकदान करता है । भिन्न-भिन्न मूल्य निर्धारित कर लिये है उसने अंकों के लिए। परीक्षा में उत्तीर्ण होने के लिए मात्र सौ रुपये और प्रवक्ता पद के लिए पाँच हजार रुपये और प्रवक्ता पद के लिए पाँच हजार रुपये स्वीकार करता है यह विद्यामंदिर का देवता ।

'बालक गुरो ! विश्वविद्यालयशिक्षकोऽयं त्रिपुण्डमण्डितमस्य सम्पूर्ण विद्यार्थीजीवनम्। स्वामुष्मिककल्याणार्थं छात्रेभ्य - छात्रीभ्यश्च (विशेषेण) अड़कदानं विदधाति.

(चतु0 / इन्द्र - पृ.सं. - 37-38)

पुनः सेतुओं चतुर्थ पुरुष की ओर संकेत करता है जो इंजीनियर है। ऐसे सेतुओं का निर्माण करता है जो वर्षभर या छः माह में ही टूटकर गिर जाते हैं। यह सीमान्त चूर्ण के स्थान बालू मिलाता है। चार सरियों के स्थान पर तीन सरियों का ही प्रयोग करता है। उत्तम श्रेणी की ईटों के स्थान पर लाल रंग की ईटों का प्रयोग करके भवन का निर्माण करता है । किसी समय में यह दरिद्र था और अब तो धनाधान्य से समृद्ध लक्षपति है ।

'बालकः - गुरो ! अयमेव तुरीयः श्रेष्ठपुरुषः । वर्षजीविनः षण्मासजीविनो वा एतान्निर्मिता सेतुबन्धाः। अयं सीमन्तचूर्णं; ब्मउमदजद्ध समधिककसिकतां मेलयति । चतुस्सूत्रयोदयण्डस्थाने त्रिसूत्रयोदण्डान् प्रयुनक्ति ।'

(चतु० / इन्द्र - पृ.सं. - 39)

IJRSSH

(IJRSSH) 2013, Vol. No. 3, Issue No. II, Apr-Jun ISSN: 2249-4642

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. चतुष्पथीयम् , डॉ0 राजेन्द्र मिश्र, वैजयन्त प्रकाशन, इलाहाबाद
2. काव्य प्रकाश, आचार्य मम्मट, रतिराम शास्त्री, साहित्य भण्डार, सुभाष बाजार, मेरठ
3. काव्यादर्श, आचार्य दण्डी , चौखम्भा संस्कृत संस्थान, वाराणसी
4. साहित्यदर्पणम्, श्री नारायण शास्त्री खिस्ते, रतिराम शास्त्रीय साहित्य भण्डार सुभाष बाजार, मेरठ
5. नाट्यशास्त्रम्, आचार्य भरतमुनि चौखम्भा संस्कृत संस्थान, वाराणसी
6. दशरूपकम्, आचार्य धनंजय, चौखम्भा संस्कृत संस्थान, वाराणसी
7. संस्कृत प्रवेशिका, डॉ० सुदर्शन लाल जैन

REFERENCES

1. Chatushpathiyam, Dr. Rajendra Mishra, Vaijayant Prakashan, Allahabad
2. Kavya Prakash, Acharya Mammat, Ratiram Shastri, Sahitya Bhandar, Subhash Bazar, Meerut
3. Poetry, Acharya Dandi, Chaukhambha Sanskrit Institute, Varanasi
4. Sahityadarpanam, Shri Narayan Shastri Khiste, Ratiram Classical Literature Store Subhash Bazar, Meerut
5. Natyashastram, Acharya Bharatmuni Chaukhambha Sanskrit Sansthan, Varanasi
6. Dasharoopakam, Acharya Dhananjay, Chaukhambha Sanskrit Sansthan, Varanasi
7. Sanskrit Praveshika, Dr. Sudarshan Lal Jain

IJRSSH